विचार बिन्दु

महान ध्येय का मौन में ही सृजन होता है। –साने गुरूजी

ज्ञान, समझ व युक्ति जीवन को सुखी और हितकारी बनाने के लिए अनिवार्य है

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुतः आंकड़ों से आंकड़ों, या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं:– शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं:– थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है।

किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है। विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ ही पिछले पाँच दशकों के दौरान साइंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है। विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरोबायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकल ट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेइट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतु विजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समग्रता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुये किये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकलविजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकलविजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकल रिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यामिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्म वस्तुतः आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है।

युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है।

ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है। असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझ के वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकल ट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनलरेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहारया प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुतः प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायुप्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती।

अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ सेभी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धिःपश्यति या भावान्बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेयात्रिवर्गःसाध्यतेयया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

दैनिक जीवन में समस्या-समाधान हेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्य चरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीन बहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अजयसर में सेही के हमले से तेंदुए की मौत, शव पर मिले चार कांटे

अजमेर, (कासं)। शहर के अजयसर के जंगलों में एक तेंदुए का शव मिलने से वन विभाग में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की सूचना पर वन विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। वन विभाग के द्वारा तेंदुए का शनिवार को पोस्टमार्टम करवाकर अंतिम संस्कार किया। वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार सेही के हमले से तेंदुए की मौत हुई है। पोस्टमार्टम के दौरान तेंदुए के शरीर से करीब 3 से 4 कांटे भी मिले हैं। तेंदुए का शव 10 दिन पुराना बताया जा रहा है।

■ **वन विभाग ने मेडिकल बोर्ड से करवाया पोस्टमार्टम**

गौरतलब है कि 23 जून की शाम 6 बजे के करीब अजयसर फॉरेस्ट एरिया में ग्रामीणों को तेंदुए का सड़ा-गला शव दिखाई दिया। ग्रामीणों के द्वारा इसकी सूचना वन विभाग को दी गई। सूचना मिलने पर रेंजर देशराज मेघवाल टीम के साथ पहुंचे, जहां उन्हें तेंदुए का सड़ा गला शव मिला। रेंजर देशराज मेघवाल ने बताया कि तेंदुए का शव 10 दिन पुराना है। मौके पर जायजा लेने के बाद बॉडी को घुघरा नर्सरी में ले जाया गया। रेंजर मेघवाल ने बताया कि तेंदुए की बॉडी ज्यादा सड़ जाने के कारण जेंडर का खुलासा नहीं हो पाया है। शनिवार को नर्सरी में तेंदुए का पोस्टमार्टम करवाया गया है और पोस्टमार्टम के दौरान तेंदुए के शरीर पर 3 से 4 सेही के काटे मिले है। मौके से भी कई काटे मिले थे। पोस्टमार्टम के दौरान डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. राजकुमार सहित अन्य डॉक्टर्स सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद थे।

अजमेर के अजयसर के जंगलों में तेदुंआ मृत मिला।

महिला से किसी और के बिजली बिल की बकाया राशि वसूली जा रही है

देवली, (निसं)। विद्युत विभाग की मनमानी जनता के लिए दमनकारीनीति साबित होती जा रही है। ऐसा ही एक मामला शुक्रवार को सामने आया है। यहां विद्युत विभाग किसी अन्य व्यक्ति के नाम की बकाया राशि एक महिला से जबरन वसूल करने की हठधर्मिता अपनाए हुए है।

मामला यह है कि जयपुर डिस्कॉम ने 2009 में विद्युत उपभोक्ता धर्म चंद पुत्र रामेश्वर लाल कुमावत निवासी जयपुर रोड देवली के नाम पर 25632 रुपये की बकाया राशि निकाल रखी है। इस बकाया राशि को विभाग के अधिकारी एक अन्य विद्युत महिला उपभोक्ता संतरा देवी से जबरन वसूल करना चाह रहे हैं। जबकि पीड़ित महिला का धर्म चंद कुमावत से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। बस गुनाह इतना है कि 2010 में संतरा देवी ने धर्म चंद कुमावत से मकान बनाने के लिए आवासीय भूमि खरीदी थी। 2009 में धर्म चंद कुमावत विद्युत विभाग की बकाया राशि चुकाए बगैर ही लापता हो गया। विद्युत विभाग वाले जिसकी तलाश कर रहे हैं। लेकिन धर्म चंद कुमावत अब तक विद्युत विभाग गर्मियों के पकड़ में नहीं आया जिसका खामियाजा संतरा देवी को भुगतना पड़ रहा है। इसलिए कि विद्युत विभाग का यह मानना है कि संतरा देवी ने धर्म चंद कुमावत से भूखंड खरीदा है उस पर 2009 से विद्युत विभाग की बकाया राशि चल रही है। इस पर संतरा देवी ने उक्त व्यक्ति के नाम की राशि जमा कराने से इंकार कर दिया तो विद्युत विभाग के अधिकारियों ने संतरा देवी के नाम का विद्युत कनेक्शन काटकर उसे अंधेरे में रहने के लिए मजबूर कर दिया है। साथ ही विद्युत विभाग के अधिकारियों ने महिला उपभोक्ता को चेतावनी दी है कि जब तक संतरा देवी धर्म चंद कुमावत के नाम की बकाया राशि जमा नहीं करा देती तब तक अधिकारी संतरा देवी के घर का विद्युत लाइन नहीं जोड़ेंगे। जबकि धर्मचंद का विद्युत खाता संख्या 181100 47 है और संतरा देवी का विद्युत खाता संख्या 21010 194 हैं।

■ **बिजली विभाग के अधिकारियों ने नियमित बिल जमा कराने वाली महिला का विद्युत कनेक्शन काट दिया**

इस मामले में यह सामने आई की जयपुर डिस्कॉम ने 13 साल बाद उक्त भूमि के पूर्व मालिक के नाम बकाया राशि को वर्तमान भूमि की मालिकान संतरा देवी नामक एक महिला से वसूलने की योजना बनाई है। उक्त दौरान की विद्युत बकाया राशि चुकाने का नोटिस धर्म चंद के नाम से जारी करके विद्युत उपभोक्ता संतरा देवी पर उक्त व्यक्ति की बकाया राशि को चुकाने का दबाव बनाया जा रहा है। जबकि दोनों ही विद्युत विभाग के अलग-अलग उपभोक्ता हैं।

पीड़ित महिला का कहना है कि उनके नाम से विद्युत कनेक्शन पर जो बिल हर महा जारी किया जाता है उसे वह कनेक्शन लिए जाने से लेकर अब तक नियमित रूप से जमा कराती हुई आई है। विद्युत विभाग में उनके नाम कोई बकाया राशि नहीं है। यह विभाग भी मानता है। इसके बावजूद अधिकारी ने संतरा देवी के नाम के कनेक्शन को काट दिया इसलिए कि 2009 की बकाया राशि धर्मचंद पुत्र रामेश्वर लाल कुमावत के नाम से बकाया चल रही है। जो पहले उक्त निवास का मालिक हुआ करता था।

दिनेश कुमार जैन सहायक अभियंता जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड का कहना है कि धर्म चंद कुमावत के नाम 2009 से 25632 की बकाया राशि चल रही है। धर्म चंद कुमावत का मकान भूमि 2010 में संतरा देवी ने खरीद लिया। 2016 में विभाग को अंधेरे में रखते हुए संतरा देवी ने अपने नाम से नया कनेक्शन जारी करवा लिया था। विभाग के नियम अनुसार जिस भूमि या भवन पर विभाग का बकाया रहता है और उसका बेचान हो जाता है, तो इस पर खरीददार से विद्युत का बकाया वसूली किए जाने के नियम हैं। इसीलिए संतरा देवी का विद्युत कनेक्शन काटकर धर्मचंद की बकाया राशि संतरा देवी से वसूली किए जाने की कार्रवाई की है।

बूंदी का किला जल्द ही रात में भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा

बून्दी, (निसं)। बूंदी का ऐतिहासिक किला जल्द ही रात के समय भी पर्यटकों और आमजन के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाएगा। किले पर जल्द ही फसाड लाइट्स लगाने का काम प्रारंभ होने वाला है। इसके लिए टेण्डर प्रक्रिया पूरी हो गई है। बूंदी के स्थापना दिवस के अवसर पर लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शनिवार को अपने ट्विटर और फेसबुक पेज पर लाइट्स लगने के बाद के प्रस्तावित लुक की फोटो साझा कीं।

■ **बूंदी किले पर जल्द शुरू होगा फसाड लाइट्स लगाने का काम**

■ **लोकसभा अध्यक्ष ने फेसबुक पर साझा किया लाइट्स लगने के बाद लुक**

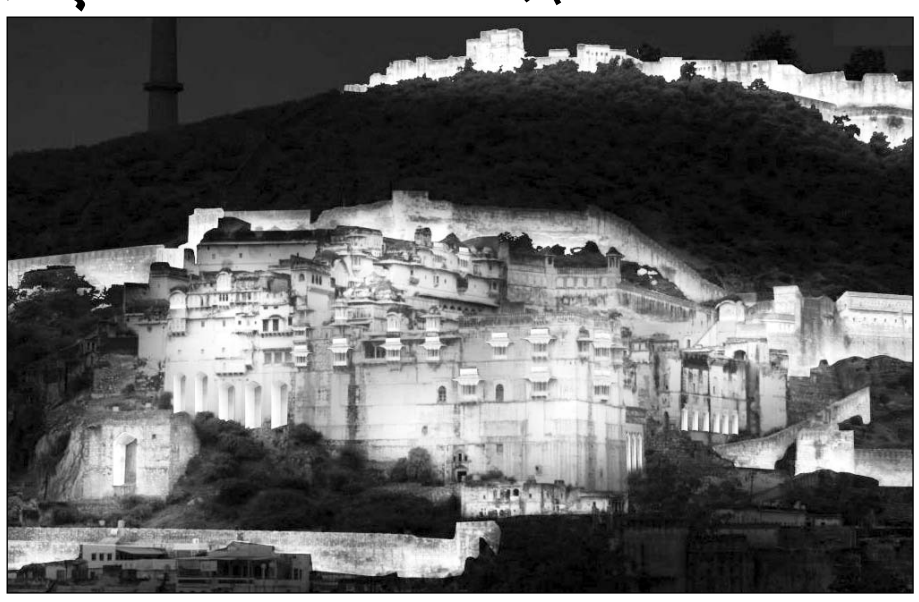

बूंदी के ऐतिहासिक किले पर जल्द ही फसाड लाइट्स लगाने का काम शुरु होगा।

गौरवशाली विरासत और अद्भुत स्थापत्य कला संजोए बूंदी के किले, बावड़ियों व अन्य ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक देश-विदेश से आते हैं। दिन में इन पर्यटन स्थलों पर रौनक रहती है, लेकिन रात में जैसे यह अंधेरे में खो जाते हैं। फसाड लाइट्स के माध्यम से राज के समय इनकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला के निर्देश पर कार्ययोजना तैयार की गई थी। इसके पीछे उद्देश्य था कि रात के समय भी यह किले और ऐतिहासिक स्थल आकर्षण का केंद्र रहे। पर्यटकों के साथ आसपास के जिलों, नगरों, कस्बों और गांवों के लोग भी इन्हें देखने के लिए बूंदी आए। विभिन्न एजेंसियों और स्थानीय लोगों से चर्चा के बाद यहां फसाड लाइट्स लगाने की प्लानिंग की गई। अब इसको लगाने के टेंडर भी हो गए हैं। बहुत जल्द फसाड लाइट्स लगने का काम पूरा हो जाएगा।

बूंदी के किले पर फसाड लाइट्स लगाने काम गुणवत्ता के साथ हो इसके लिए स्पीकर बिरला के निर्देश पर विशेष ध्यान दिया गया है। लाइट्स लगाने की प्लानिंग का पूरा काम ऐसी कम्पनी को सौंपा गया जो अमृतसर में हरमंदिर साहिब (गोल्डन टेंपल), जयपुर में हवा महल, कृष्ण जन्मभूमि मथुरा, ग्वालियर के किले सहित देश के अनेक प्रमुख स्थलों पर कार्य कर चुकी है। स्पीकर बिरला के प्रयासों से केशवरायपाटन मंदिर परिक्षेत्र में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत 70 करोड़ रूपए के विकास कार्य होंगे। इस कार्यों की भी डीपीआर निर्माण का कार्य अंतिम चरण में है। स्पीकर बिरला ने शनिवार को केशवरायपाटन मंदिर परिक्षेत्र का संभावित लुक भी बूंदी के स्थापना दिवस पर शनिवार को ट्विटर और फेसबुक पर साझा किया।

जोधपुर मंडल के 15 रेलवे स्टेशनों का होगा कायाकल्प

जोधपुर, (कासं)। रेलवे की अमृत स्टेशन योजना के तहत केंद्र सरकार ने उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल पर चयनित 15 रेलवे स्टेशनों के विकास के लिए 272 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं। इसके साथ ही इन स्टेशनों के आधुनिकीकरण का कार्य चरणबद्ध तरीके से आरंभ किया जाएगा।

डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि अमृत स्टेशन योजना के तहत देश के एक हजार छोटे लेकिन महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों के विकास की कार्य योजना के तहत जोधपुर मंडल के 15 रेलवे स्टेशनों को शामिल किया गया है जिनके पुनर्विकास व यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए लगभग 272 करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे। योजना के प्रथम चरण में स्टेशन कार्यालयों को शिफ्ट किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रेलवे की अमृत भारत स्टेशन योजना इसी वर्ष क्रियान्वित की जाएगी तथा इन स्टेशनों का सर्वे करवा लिया गया है। पुनर्विकास होने के बाद इन स्टेशनों पर यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। डीआरएम ने बताया कि रेल मंत्रालय की अमृत भारत स्टेशन विकास योजना के तहत जोधपुर मंडल के 15 प्रमुख स्टेशन नागौर, नोखा, बाड़मेर, मेड़ता हैं. रोड, मारवाड़, भीनमाल, डीडवाना, गोटन, सुजानगढ़, जालौर, रामदेवरा, बालोतरा, रेन, फलोदी, डेगाना और देशनोक शामिल हैं।

राशिफल रविवार 25 जून, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र प्रातः 10:11 तक, व्यतिपात योग सोमवार प्रातः 6:06 तक, चन्द्रमा आज सांय 4:52 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-मिथुन, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से दिन 12:26 तक है। रवियोग दिन 10:11 तक है। त्रिपुष्कर योग दिन 10:11 से रात्रि 12:26 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 10:11 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 12:46 से सोमवार दिन 1:15 तक रहेगी। आज विवस्त सप्तमी, सूर्य पूजा, व्यतिपात पूण्य, भानु सप्तमी है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:21 से 9:04 तक, लाभ-अमृत 9:04 से 12:31 तक, शुभ 2:12 से 3:55 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:34, सूर्यास्त 7:20

मेष
परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के साथ मनोरंजन के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों को सुविधानुसार करने का प्रयास करें। वाणि पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
व्यक्तिगत कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। स्थाई सम्पत्ति से धन लाभ होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

वृश्चिक
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।